कथा सरिता

असली हीरा

एक बार सम्राट विक्रमादित्य अपने सेनापति और मंत्री के साथ रथ पर सवार होकर कहीं जा रहे थे। मार्ग में उन्होंने देखा कि सड़क पर धान के दाने बिखरे पड़े हैं। उन्होंने अपने सारथी से कहा - ''सारथी! रथ रोको, यहाँ भूमि हीरों से पटी पड़ी है। ज़रा मुझे हीरे उठाने दो।'' उनके मंत्री ने भूमि की ओर देखा और बोले -''महाराज! संभवतया आपको भ्रम हुआ है। भूमि पर हीरे नहीं, धान के दाने पड़े हुए हैं।''

सम्राट विक्रमादित्य तुरंत रथ से नीचे उतरे और धान के दानों को बटोरकर अपने माथे से लगाने लगे। ऐसा करके उन्होंने मंत्री की ओर देखा और बोले- ''मंत्री जी! आपने पहचानने में भूल की है। असली हीरा तो अन्न ही होता है। अन्न से ही सबका पेट भरता है। इसीलिए अन्न को हमारे ऋषि-मुनियों ने श्रद्धापूर्वक अन्नदेव कहकर सदैव उसका सम्मान करने की प्रेरणा दी है। अत: अन्न के प्रत्येक दाने का आदर करना चाहिए। अन्न का यह दाना किसी हीरे से कम कैसे हो सकता है!''

सम्राट विक्रमादित्य के ऐसा कहने पर अचानक उनके मंत्री को अनुभूति हुई कि जैसे साक्षात् अन्नपूर्णा वहाँ खड़ी होकर सम्राट विक्रमादित्य को आशीर्वाद दे रही हों कि जिस राज्य का राजा अन्न के प्रत्येक दाने का इतना सम्मान करता हो, उस पर उनका सदैव आशीर्वाद रहेगा और वह राज्य सदैव अन्न के अक्षय भंडार से परिपूर्ण रहेगा।

समर्पण

महादेव भाई देसाई, महात्मा गांधी से मिलने के लिए पहुँचे। उस समय वे युवा थे और कुछ नया करने के जोश से भरे हुए थे। उन्होंने गांधी जी से निवेदन किया - ''मैंने आपकी गुजराती भाषण का अंग्रेजी में अनुवाद किया है। कृपया जाँच लें कि यह ठीक है अथवा नहीं। यदि उचित लगे तो मैं आपकी सेवा में रहना चाहूंगा। मुझे अपने साथ कार्य करने का अवसर प्रदान करें।'' गांधी जी ने भाषण पढ़ने से पहले ही महादेव भाई को अपनी स्वीकृति दे दी।

गांधी जी बोले- ''ठीक है! तुम जैसा चाहते हो, वैसा ही होगा। आज से तुम मेरे सचिव पद पर कार्य करोगे।'' महादेव भाई बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने उत्साहित होकर पूछा - ''मैं कब से कार्य शुरु करूँ?'' गांधी जी बोले - ''बस अभी से शुरू कर दो।'' इस पर महादेव भाई बोले - ''लेकिन मैं अभी घर से पूछकर नहीं आया हूँ। मैं चाहता हूँ कि एक बार घर सूचना दे आऊँ।'' तब गांधी जी ने कहा - ''अब तुम घर नहीं जाओ। अपने आप को देश सेवा में अर्पित करने वालों को सब कुछ छोड़ना पड़ता है। अपने अतीत से चिपके रहोगे तो समर्पण कैसे करोगे।''

महादेव भाई गांधी जी का आशय समझ गए। उस दिन से उन्होंने अपना कार्यभार संभाल लिया और पूरी निष्ठा के साथ गांधी जी के दाएं हाथ के रूप में कार्य में जुट गए। वह अंतिम दिन था, जब वे अपने घर गए थे, उसके बाद उन्होंने कभी मुड़कर नहीं देखा। यद्यपि भारतीय स्वाधीनता के इतिहास में उनका नाम प्रमुखता से नहीं आता, तब भी इस महायज्ञ में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही, जो सदा अविस्मरणीय रहेगी।

दृढ़ संकल्प

दस माह की अवस्था में पिता को खो चुके रामकृष्ण बुवा को बचपन से ही गाने का शौक था, लेकिन आर्थिक दुरवस्था उनकी संगीत की शिक्षा में बाधक बन रही थी। संगीत सीखने की लालसा उन्हें ग्वालियर में उस्ताद निसार हुसैन खाँ तक खींच लाई। वे उनसे संगीत सीखने लगे, लेकिन दो वक्त के भोजन की समस्या तो रोज़ ही उत्पन्न हो जाती थी। संगीत से उन्हें ऐसा लगाव था कि वे भीख मांगकर अपना पेट भरते। एक बार खाँ साहब ने उनके फटेहाल वस्त्र देख उनसे कहा - ''यहाँ से चले जाओ, क्यों संगीत सीखने की रट लगा रखी है!'' इस पर रामकृष्ण बुवा बोले - ''मैंने संगीत सीखने का संकल्प लिया है, संगीत सीखे बगैर नहीं जाऊंगा।'' आखिरकार पं. रामकृष्ण बुवा ऐसे श्रेष्ठ गायक बने जिन्होंने कई घरानों की गायकी को मिलाकर अपनी विशिष्ट शैली विकसित की। सच है कि यदि मन में कुछ करने की सच्ची चाह हो तो मार्ग की बाधाएँ दूर होती चली जाती हैं।

माउण्ट आबू-पीस पार्क। राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस 2016 के अवसर पर सामुदायिक रेडियो मधुबन 90.4 एफ.एम. एवं ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित ऊर्जा संरक्षण जागरुकता प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए म्युनिसिपल चेयरमैन सुरेश कलमाड़ी। साथ हैं ब्र.कु. शीलू, ब्र.कु. शम्भूनाथ, ब्र.कु. यशवंत,90.4 एफ.एम. रेडियो तथा अन्य।

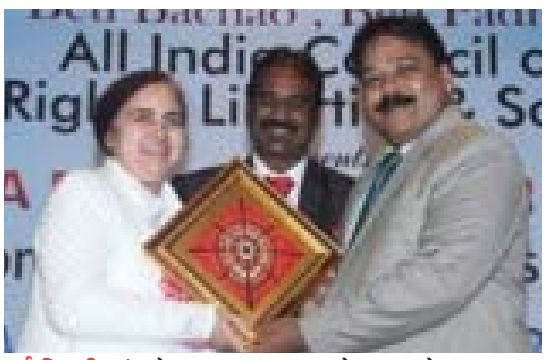

नई दिल्ली। इंटरनेशनल ह्युमन राइट्स डे-2016 के अवसर पर इंडिया इस्लामिक सेंटर ऑडिटोरियम में इंटरनेशनल ह्युमन राइट्स अवॉर्ड, 6वें भारतीय मानव अधिकार सम्मान-2016 के दौरान समाज में शांति, एकता तथा मानव अधिकारों की सुरक्षा के लिए अपने अमूल्य योगदानों के लिए 'एम्बेसडर फॉर पीस अवॉर्ड-2016' प्राप्त करते हुए ब्र.कु. बिन्नी।

फतेहाबाद-हरियाणा। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष सुभाष बराला को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. सीता। साथ हैं जिला उपायुक्त ए.के. सोलंकी तथा अन्य।

देवघर-वैद्यनाथ(झारखण्ड)। जन जन तक ईश्वरीय संदेश पहुँचाने हेतु निकाली गई प्रभात फेरी का झण्डी दिखाकर शुभारंभ करते हुए वार्ड पार्षद एवं समाजसेवी रीता चौरसीय। साथ हैं ब्र.कु. रीता तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

जयपुर-राज.। 'अलविदा तनाव शिविर' के दौरान सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. पूनम। मंचासीन हैं मध्य में एस.डी. शर्मा,देवस्थान विभाग चेयरमैन, राजेन्द्र शेखावत,रिटा. एडिशनल ए.सी.पी. तथा अन्य।

जालोर-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ के न्यायिक प्रभाग द्वारा कलेक्ट्रेट में 'न्यायिक सुधार एवं आध्यात्मिक जागृति' विषय पर कार्यक्रम के दौरान सम्बोधित करते हुए बी.डी. राठी,रिटा. जस्टिस,एम.पी. हाई कोर्ट। साथ हैं के.सी. नाहर,जिला जज, ब्र.कु. मंजू,ओडिशा, ब्र.कु. रंजू तथा अन्य गणमान्य जन।